“असग़र वज़ाहत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चेतना”

मानव्य विद्या कला संकाय अंतर्गत पीएच्.डी. हिंदी उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबंध रूपरेखा

(Ph.D. Synopsis)

स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

शोधकर्ता

मंगरूळे इसाबेग घुडूसाहेब

(M.A.M.Ed.M.Phil.)

शोधनिर्देशक

डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे

(M.A.Ph.D.NET.JRF)

स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,उदगीर,जि.लातुर

शोध केंद्र

हिंदी भाषा साहित्य अनुसंधान केंद्र

महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,उदगीर

नवम्बर–2019

“असग़र वज़ाहत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चेतना”

प्रास्ताविक:

आधुनिक हिन्दी साहित्य के विकास में उपन्यास का बहुत बड़ा योगदान है। समाज को वास्तविक रूप में प्रस्तुत करने का प्रबल माध्यम उपन्यास साहित्य है। इसका सीधा संबंध मानव—समुदाय से होता है। उपन्यास साहित्य में सृजन और आस्वादन का संतुलित योग देखने को मिलता है। “असग़र वज़ाहत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चेतना” की व्यापक अभिव्यक्ति हुई है। उनके उपन्यास साहित्य में मानव जीवन मूल्यों की टकराहट पर्याप्त चर्चा का विषय बनी हुई है। इसी दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में “असग़र वज़ाहत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चेतना” विषय शोध हेतु लिया गया है।

इसी दृष्टि के परिप्रेक्ष्य में “असग़र वज़ाहत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चेतना” इस शोध प्रबंध को निम्नलिखित पॉच अध्यायों मे विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय : सामाजिक चेतना का सैध्दांतिक अध्ययन

इस अध्याय में सामाजिक चेतना का सैध्दांतिक अध्ययन किया जाएगा। चेतना का संबंध मनुष्य और उसके समाज से है। मनुष्य और समाज की सृजनात्मक अभिव्यक्ति ही साहित्य है। इसलिए वही साहित्य महत्वपूर्ण होता है जिसमें मनुष्य का जीवन और उसका समाज यथार्थ रूप में अभिव्यक्त होता है। मानवीय समाज जीवन एक गतिशील प्रक्रिया है। सामाजिकता के कारण मनुष्य के मानवीय संबंधों में परिवर्तन होते रहते हैं। यह परिवर्तन मनुष्य जीवन का स्वभाव है। यही परिवर्तन आगे चलकर सामाजिक चेतना में परिवर्तन के

कारण बनते हैं। सामाजिक चेतना की यथार्थ और प्रामाणिक प्रस्तुति ही साहित्य को महान बनाती है। महान साहित्य का प्रयोजन मनुष्य मात्र का कल्याण है। किसी भी साहित्यिक कृति के 'कालजयी' होने का यह एक प्रामाणिक तर्क है। साहित्यकार युग दृष्टा होता है। अत: वह साहित्य सृजन के समय अपने समय और समाज की उपेक्षा नहीं कर सकता। साहित्य अपने सृजन के माध्यम से एक बेहतर समाज और मनुष्य के बेहतर जीवन का 'मॉडल' प्रस्तुत करता है। सामाजिक चेतना मनुष्य की चेतना और साहित्यिक चेतना का समुच्चय है।

द्वितीय अध्याय : असग़र वज़ाहत:व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में 'असग़र वज़ाहत के व्यक्तितत्व एवं कृतित्व' पर प्रकाश डाला जाएगा। हम जब भी किसी साहित्यकार का नाम सुनाते है, तब हमारे हृदय में सबसे पहले प्रश्न यह उठता है कि उनके संस्कार, पारिवारिक वातावरण, उनकी शिक्षा—दीक्षा, उनका व्यवहार कैसा था? उन्होंने लिखना प्रारम्भ कब किया? उनका साहित्य के प्रति रूझान कैसे बढ़ा? उनकी पहली कृति कौन—सी थी? उससे उन्हें कितनी प्रसिद्धि मिली? उनके जीवन में संघर्ष के कौन से पल थे? आदि इस अध्याय के अन्तर्गत असग़र वज़ाहत के व्यक्तितत्व पर प्रकाश डाला जाएगा।

एक लेखक तभी सफल माना जाता है, जब वह अपने समकालीन परिवेश की सामाजिक परिस्थितियों से पूर्णत: अवगत हो और अपने वैयक्तिक स्तर को छोड़कर सार्वजनिक स्तर पर सोच—विचार सके। असग़र वज़ाहत उन्हीं साहित्यकारों में से हैं। जो अपने समकालीन परिवेश से परिचित थे। उनका अपना दृष्टिकोण था, हर परिस्थिति को देखने और सोचने समझने का। "असग़र वज़ाहत हिन्दी कथा—साहित्य में अपना अलग स्थान बनाने में सफल रहे। ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि जब वे अपनी अलग परिपाटी को रचा

रहे थे, तब लोगों ने उनका स्वागत किया बल्कि उनके पक्ष—विपक्ष दोनों में आलोचकों ने अपनी टिप्पणियाँ दी, परन्तु उन्होंने अपनी आलोचना का कभी विरोध नहीं किया बल्कि वे अपने मार्ग पर एक चित्त होकर चलते रहे।

साहित्यकार के भौतिक व्यक्तितत्व का परिचय उनकी कलाकृति में प्रतिबिंबित होता है। उनकी कलात्मकता से हटकर भी उनका अपना अलग जीवन संसार होता है। एक शोधकर्ता को किसी साहित्यकार के अध्ययन करते समय उनके व्यक्तितत्व का अध्ययन इसलिए महत्वपूर्ण लगता है कि उनके जीवन की संपूर्ण जानकारी हासिल की जाती है। असग़र वज़ाहत एक समर्थ कथाकार हैं। उनका जन्म इ. सन 5 जुलाई, 1946 को उत्तर प्रदेश के फतेहपुर में हुआ। उन्होंने अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम०ए० तक की पढ़ाई की एवं वहीं से पी—एच०डी० की उपाधि भी पायी। पोस्ट डॉक्टोरल रिसर्च जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली से किया। 1971 से जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के हिंदी विभाग में अध्यापन किया। 5 वर्ष ओत्वोश लोरांड विश्वविद्यालय, बुडापेस्ट, हंगरी में भी अध्यापन किया। यूरोप और अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में उनके व्याख्यान हो चुके हैं।

हिन्दी साहित्य के क्षेत्र मे मुख्यत: साठोत्तरी पीढी के बाद के महत्वपूर्ण कहानीकार एवं सिध्द्हस्त नाटककार के रूप में उन्हें पहचाना जाता है। उनके साहित्यिक जीवन की शुरूआत कहानी से हुई। उसके बाद उपन्यास, नुक्कड नाटक, संस्मरण, यात्रा संस्मरण, आख्यान, निबंध, बालसाहित्य, पत्र—पत्रिकाओं का संपादन आदि विधाओं में उनकी प्रतिभा का पल्लवन हुआ है। अत: उनकी सृजन धर्मिता के आधार स्त्रोत के रूप में उनके संघर्षशील जीवन उनके साहित्य में देखने को मिलता है। इन्होने अपने लेखन में समाज के यथार्थ को

जगह दी है। मजदूरों, आम जनता के शोषण को और शोषकों के अत्याचार को दर्शाया है।

तृतीय अध्याय : असग़र वज़ाहत के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन

प्रस्तुत अध्याय में असग़र वज़ाहत के उपन्यासों का कथ्यगत अध्ययन किया जाएगा। किसी भी कथा–सृजन के लिए यह कथ्य अनिवार्य हैं। 'कथ्य' ही उपन्यास की आत्मा कहलाता है। उपन्यास के 'कथावस्तु' को बाह्य आवरण या स्थूल कहा जाता है।

उपन्यास

1. सात आसमान, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1996
2. पहर–दोपहर, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, 1996
3. कैसी आगी लगाई, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2006
4. बरखा रचाई, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2011
5. धरा अँकुराई, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 201489
6. उपन्यासिका–'मन–माटी' एवं 'चहारदर' दो उपन्यासिकाओं का एकत्र संकलन, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

चतुर्थ अध्याय : असग़र वज़ाहत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक चेतना

इस अध्याय में असग़र वज़ाहत के उपन्यासों में व्यक्त सामाजिक स्थिति का अभ्यास किया जाएगा। बीसवीं शताब्दी, तेजी से परिवर्तित सामाजिक चेतना का युग रहा हैं। यह स्थिति तब और भी अधिक परिवर्तित हुई, जब भारत स्वतंत्र हुआ। वर्तमान स्थिति यह है कि प्राचीन नैतिक मूल्य खण्डित हो रहे हैं और सदियों से चली आ रही सामाजिक मान्यताएँ बिखरती जा रही हैं। आज के जीवन में व्यक्ति नये–नये संघर्षों से व्यक्ति घिरता जा रहा है और वही आन्तरिक रूप से टूट रहा हैं। सामाजिक संबंधों और व्यक्तिगत रिश्तों में दरारे अपना स्थान बनाती जा रही है और साथ–ही आपसी संबंध नाममात्र के

लिए रह गये है। मानव जीवन के तीन स्तर है—व्यक्ति, परिवार एवं समाज। ये तीनों ही स्तर अपने नए अर्थों में बदल रहे है। स्वतंत्रता के पश्चात् उपन्यासकारों ने इस बदलाव को अपने उपन्यासों के माध्यम से पाठकों तक पहुँचने का प्रयास किया हैं।

लेखक ने अपने उपन्यासों में जहाँ समाज की अनमेल—विवाह, विधवा—विवाह, दहेज, तलाक, पुनर्विवाह, रखैल की समस्याओं को बहुत ही सूक्ष्मतः से दिखाया गया है।

पंचम अध्याय : असग़र वज़ाहत के उपन्यासों की भाषा शैली

प्रस्तुत अध्याय में असग़र वज़ाहत के उपन्यासों की भाषा शैली का अध्ययन किया जाएगा। उपन्यास साहित्य का भाषागत की चर्चा करते हुए अनेक उद्धरण प्रस्तुत किए गये हैं। इसमें भाषा के विभिन्न रूप जैसे भावानुकूल भाषा, यथार्थवादी भाषा, काव्यात्मक भाषा, अलंकृत भाषा, ऑचलिक भाषा, बिंबात्मक भाषा आदि लेते हुए विषद और व्यापक रूप में उपन्यासों के उद्धरण लिए गये हैं तथा उनका विश्लेषण किया जाएगा।

असग़र वज़ाहत के उपन्यास साहित्य की 'भाषा' और 'शैली' दो उप अध्यायों में बाँटा गया है। असग़र वज़ाहत अपनी भाषा के लिए विशेष रूप से जाने जाते है, क्योंकि उन्होंने चली आ रही पुरानी परिपाटी को नहीं अपनाया बल्कि वे अपने उपन्यास साहित्य में भाषा के नये रूप का प्रयोग किया है। उनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसमें व्याप्त काव्यात्मकता है। जिसके कारण पाठकों को उनके साहित्य को पढ़ने के लिए कविता जैसी एकाग्रता की आवश्यकता हैं। उनकी भाषा में कविता जैसी लयात्मकता, संगीतात्मकता एवं गीतात्मकता हैं। वे अपनी भाषा में ऐसी लय का प्रयोग करते है कि पाठक अध्ययन करते समय उन्हें बीच में नहीं छोड़ सकता है। वे अपनी भाषा में अंग्रेजी, चेक, उर्दू, बोलचाल की भाषा, संस्कृत के

तत्सम—तद्‌भव आदि शब्दों का प्रयोग करते है। वही उनकी भाषा मूर्त से अमूर्त की ओर जाती है। उनकी भाषा में रहस्यात्मकता, संवेदना व्याप्त है जो पाठक को उबती नहीं है बल्कि उसे बंधे रखती हैं।

उपसंहार

अंत में उपसंहार है। उपसंहार में मैं अपने शोध के निष्कर्ष प्रस्तुत करूगा। इसके साथ ही असग़र वज़ाहत से साक्षात्कार लिया जाएगा जो परिशिष्ट में जोड़ा जाएगा। इसके पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची संलग्न है।

धन्यवाद।

शोधकर्ता
मंगरूळे इसाबेग घुडूसाहेब
(M.A.M.Ed.M.Phil.)

शोधनिर्देशक
डॉ.बळीराम संभाजी भुक्तरे
(M.A.Ph.D.NET.JRF)
स्नातकोत्तर हिंदी विभागाध्यक्ष
महाराष्ट्र उदयगिरी महाविद्यालय,उदगीर,
जि.लातुर